धूप की
लहरें
कृष्ण "दोषिज्ञ"

# धूप की लहरें

[ काव्य-संग्रह ]

गोपीकृष्ण 'गोपेश'

साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग

१९४४

प्रकाशक—

साहित्य-भवन लिमिटेड,

प्रयाग।



प्रथमबार

मूल्य १।।)

मुद्रक—

गिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव,

हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग।

अपने 'भैया साहब' को

सादर—

## प्रकाशकीय—

श्री गोपीकृष्ण 'गोपेश' प्रयाग के सुविख्यात कवि हैं। उनकी 'धूप की लहरें' हिन्दी-जगत के सामने रखते समय हम अपार हर्ष का अनुभव करते हैं, इसलिये नहीं कि हिन्दी-कवियों की श्रेणी में एक नाम और दृढ़तर हुआ, प्रत्युत इसलिये कि भविष्य में हिन्दी-काव्य को गोपीकृष्ण जी से बहुत कुछ मिल सकता है, पुस्तक मेरे कथन का समर्थन करती है—उनकी भाषा में प्रवाह है, ओज है, स्वाभाविकता है और सरलता है; उनके विचारों में प्रौढ़ता और भावों में गहनता है। आज की परिस्थितियाँ मनुष्य को यथार्थवादी बनाकर ही छोड़ती हैं, अतएव 'संग्रह' में यथार्थ भी जहाँ-तहाँ है।

आशा है पारखी इसका उचित मूल्यांकन करेंगे !

पुरुषोत्तमदास टंडन,<br>मंत्री,<br>साहित्य भवन लिमिटेड,<br>प्रयाग

## विशेष—

यह मुश्किल नहीं कि बताया जाय, काव्य की कला क्या है, काल क्या है; कविता की दोनों आँखों में एक जोत है, बताना भी कठिन नहीं; सिर्फ़ गहरे पैठकर कुल श्रेणियों की जाँच-पड़ताल के बाद एक को चुन लाना दुरूह है। हिन्दी, संस्कृत, अँगरेज़ी आदि भाषाओं के माध्यम से बहुभङ्ग भाषणों का ज्ञान पाठकों को है कि किस युग में कैसा रहा। किसी एक के बाद दूसरा परिवर्तन प्रसरण की दृष्टि से ही हुआ है, इसलिए उसको अनुन्नायक नहीं कह सकते! साम्पत्तिक आधार पर जन, देश तथा विश्व के कल्याण की जो रूसी कामयाबी जड़ प्रमाण में रक्खी जाती है और जिसकर प्रभाव पृथ्वी की भाषाओं पर पड़ा है—खासे बड़े राजनैतिक सङ्घ भी खड़े हो गये हैं—उसी का बोलबाला है; दूसरे पक्ष जो भिन्न देशों में प्रबल हैं, उनका कोई भी पार्श्व इस साहित्यिक-राजनैतिक प्रगति के लिए घातक है। अधिकारी रखने के प्रयत्न में हैं, प्रगतिशील धक्के लगाकर निकाल देने के। यह संघर्ष है। यही आधुनिक साहित्य-जीवन है। इसकी राजनैतिक बुनियाद बहुत पुख़्ता है। देश की भलाई

के जितने इतर आदर्श काम में लाये जाते हैं या लाये जाने के लिए सोचे और लिखे जाते हैं वे बाज़ू बचाकर काम निकालने वाले ठहरते हैं। प्रगति की कविता इसको प्रश्रय नहीं देती। युग की नसों में लाल ख़ून है, लाल आँखें हैं। धार्मिकता और अन्य राजनैतिक प्रभाव से दबी धर्मान्धता अपने प्रचलित साहित्यिक, राजनैतिक और धार्मिक किसी प्रवाह से प्रगति को बहा नहीं सकती; प्रगति मूलत: संसार की सभी भिन्न धाराओं की बहती विरोधी तरङ्ग है। इसमें सन्देह नहीं कि दार्शनिक मनोविज्ञान की जीवन में परिणति और समाज पर प्रभाव, जिससे सन्त-साहित्य की संसार में वृद्धि है, जिसका साहित्य किसी भी साहित्य से अधिक है, प्रगति के द्वारा उपलभ्य नहीं, प्रगति उससे पीछे है। वे दार्शनिक सत्य जीवनों में जड़-सत्य से अधिक दृढ़ होकर जमते और प्रतिफलित होते हैं। दिक्क़त जो लिखी गई वही है, उससे विकृत शासन का अन्त नहीं होता। साहित्य कविता और कला आजकल इसी प्रगति के रास्ते पर हैं।

गोपेश जी ऐसे कवि हैं, दोनों पक्षों को लिए हुए हैं। इनमें तरुण-आधुनिक-जोश और विचार भी हैं और भौतिक जड़त्व से उन्मन-सी उड़ान भी। 'धूप की लहरें' प्रमाण में हैं:—

**'आज घिरे हैं काले बादल**

**दूर गगन में, मानव मन में।'**

'........................'

किसके पूजन—आराधन में,
सूनेपन में—अपनेपन में,
'आज घिरे हैं, काले बादल
दूर गगन में, मानव-मन में।'

—'काले बादल'

ऐसी रचना से दो तरफ़ा इशारा ज़ाहिर हो जाता है।

'ऊषा ने सोने की थाली
लाकर मुझको अर्पित करदी,
सन्ध्या ने तारों की झोली
लाकर मेरे कर में धर दी,
बस और रूठकर बैठ गई
मेरी स्वप्निल दुनिया पगली।

—'कुछ'

छायावादी ढंग भाव में जान डाल रहा है। सुन्दर-सुन्दर नये छन्द भी हैं, जैसे—

'मैंने अम्बर के तारों से पूछा—
तुम भी हमसे, आकुल-आतुर हो क्या?
वे बोले जो कुछ होना हो सो हो,
आगत-गत की चिन्ता अपने को क्या!!'

—'मैंने'

जवानी की नई तरह भी है—

'आज घाव दिल के भर आये !
आज जवानी की समाधि पर,
चेतनता का दीप उठा जल,
हिली डुली वह लपक हवा में
या उल्लास हंस उठा चंचल !
..............'

—'आज'

'धूप की लहरें' ऐसे पद्यों से परिपूर्ण ४५ रचनाओं का संग्रह है। कवि गोपेश सुशिक्षित, नये कवियों में से हैं। जोश भरा हुआ है। साहित्य, देश और समाज की सेवा की जवानी ! मधुर शब्द-कण्ठ ! मुझे विश्वास है, ये रचनाएँ उत्साह से पढ़ी जायेंगी। इति।

सूर्यकान्त त्रिपाठी
'निराला'

'मैं वाग्देवी भारती' के मन्दिर में प्रविष्ट हो चुका हूँ। मेरे 'धूप की लहरें' मेरी वन्दना के स्वर-स्वर दोहरा रही हैं, मैं अनुभव करता हूँ!

*　　*　　*

'रात्रि का अन्धकार', 'सुबह का धुँधलापन', और 'धूप की लहरें' किसी भी, 'मन्दः कवि यशः प्रार्थी' के जीवन की तीन निश्चित धारायें हैं, मैं सोचता ।

*　　*　　*

गुलाब की निधि फूल भी है, काँटे भी। पथिक, यदि, फूलों के सौन्दर्य और उनकी सुवास पर मुग्ध होता है तो वह काँटों की तीक्ष्णता का अनुभव भी सुदूर तक करता है!

बस!

गोपीकृष्ण

पूज्य डाक्टर 'झा' ने सम्मति-रूप में आशीर्वाद-दान दिया, श्रद्धेय 'निराला' जी ने 'विशेष' लिखा, आभार स्वीकार करूँ !

साहित्य-भवन लिमिटेड ने संग्रह प्रकाशित किया, उसके प्राण श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करूँ !

अपने अनुज-मित्र धर्मवीर जी के लिये 'शिष्ट' बनूँ !

रानीमंडी,
प्रयाग।

गोपीकृष्ण

गीत-प्रीत -

# मुझसे मेरा नाम न पूछो।

तुमको अगणित मिलते जग हैं, तुम दुनिया के निश्चित मानव,
पार न पाओगे दुर्बल, जर्जर मेरी अन्तर्ध्वनियों का रव।
अपना उजड़ा घर क्या देखो,
मेरा उजड़ा ग्राम न पूछो।
मुझसे मेरा नाम न पूछो॥

तुमको अपनी माँ प्यारी है, तुमको अपने घर प्यारे हैं
मेरी प्यासी रात है जिसको दुनिया मिटने को रखे है,
मत पूछो - मैं क्यों आया हूँ
राम करेगा काम न पूछो।
मुझसे मेरा नाम न पूछो॥

मैं राही हूँ जिसने चलना छोड़ दिया है अपनी मंजिल,
मैं राही हूँ जिसकी राहें छूट गईं रस्ता उजड़ गया।
सुबह मौत के मुँह से निकला
चौराहे की शाम न पूछो।
मुझसे मेरा नाम न पूछो॥

गोपीकृष्ण

# क्रम—

धूप की लहरें :

रात्रि का अंधकार—

## काले बादल

आज घिरे हैं काले बादल
दूर गगन में, मानव-मन में!

लुटा रहा था कौन यहाँ पर
अभी विहंस पथ-पथ पर सोना,
चमक रहा था मणि-माणिक सा
किसके दिल का कोना-कोना!
किसके पूजन - आराधन में,
सूनेपन में - अपनेपन में,
आज घिरे हैं काले बादल
दूर गगन में, मानव-मन में!

अरमानों-से रज के कण-कण
कहाँ गये, क्या हम-तुम जाने,
अंधड़ में प्रियतम की छाया
अब कैसे देखें पहिचानें !
'बूँद गिरी', दुनिया कहती है,
'आग लगी,' मैं कहता, तन में' !
आज घिरे हैं काले बादल
दूर गगन में, मानव-मन में !!

दुनिया की काली राहों पर
काले बादल आये - छाये,
दूर पंथ के राही बैठे
पथ पर अपने नयन बिछाये,
अट्टहास कर नभ हँसता है
मानव के रोदन - क्रंदन में !
आज घिरे हैं काले बादल
दूर गगन में, मानव-मन में !!

## पथ पर

पथ पर बढ़ चली है रात,

और सहसा बादलों से भर गया आकाश,
ये न बरसें, भीगने-सी पर लगी है श्वास,
मेरी बह न जाये आश—
कौन जाने प्राण को पथ
ज्ञात या अज्ञात!
पथ पर बढ़ चली है रात!!

और बादल की कड़क सुन कँप उठा उच्छ्वास,
गिरी पथ पर, गिरी बिजली, यहाँ, मेरे पास!
कैसे हो मुझे विश्वास—
रस भला क्या, दे सकेगी विष—
मुझे बरसात!
पथ पर बढ़ चली है रात!!

और जलता है वहाँ तू म्लान, दीपक दीन,
और जलता है कि मेरी कांति तुझमें लीन,
मेरी चेतना ले छीन—
मैं मिटूँ, तू जगमगाये,
अमित सुख की बात!
पथ पर बढ़ चली है रात!!

## कवि से —

रे कवि, तूने गीत सुनाये—

जिनके स्वर-स्वर में जीवन था,
जिनके स्वर-स्वर में यौवन था,
जिनके स्वर-स्वर में श्वासों में
कुछ सिहरन थी, कुछ कम्पन था,
जिनके स्वर-स्वर बादल बनकर
नयनों के सावन में छाये !
रे कवि, तूने गीत सुनाये !!

जिनके स्वर-स्वर में इठलाकर,
बल खाकर चलते थे पत्थर,
जिनके स्वर-स्वर में पत्थर से
पत्थर कहता था आँखें भर—
'मानव क्यों तुझको पूजेगा।
जब जग के मानव पथराये!'
रे कवि, तूने गीत सुनाये!!

जिनके स्वर-स्वर से प्रेरित हो
मैंने जग में दीप जलाया,
जिनके स्वर-स्वर से प्रेरित हो
मैंने जग का दीप बुझाया,
प्राण - विहंगम दूर गगन में
उड़कर भू के पास न आये!
रे कवि, तूने गीत सुनाये!!

## रोनेवाले

रोनेवाले, रोना कम कर।

पंथी जो इस पथ से आते,
तुझे देख पल भर रुक जाते,
थोड़ा दिन, घर बहुत दूर है,
हिम्मत उनकी-चूर-चूर है।
तू रोता है, नभ रोता है,
श्याम, सघन घन छाये पथ पर।
रोनेवाले, रोना कम कर!!

उसका इकलौता बेटा था,
कल शैया पर हँस लेटा था,
उसे जलाने आज गया वह,
उसे बहाने आज गया वह,
वह आता है, उसके आँसू
उसके नयनों में हैं पत्थर!
रोनेवाले, रोना कम कर!!

संध्या के तारे हैं मोती,
दुनिया इनमें हँसती-रोती!
रोदन जीवन की परिभाषा,
आहें जीवन की अभिलाषा!
उस तट से कहता है कोई—
मुझमें-तुझमें कितना अन्तर!
रोनेवाले, रोना कम कर!!

## कभी-कभी तो

कभी - कभी तो रोते दिल को
हँसकर बहलाना होता है !

मानस ने अपनाई पीड़ा,
दुनिया ने हँसना अपनाया,
पत्थर गला, बहा आँसू बन,
गिरि काँपा, सागर घबड़ाया !
सूखे सर में सागर भरकर
तट तक लहराना होता है !
कभी - कभी तो रोते दिल को
हँसकर बहलाना होता है !!

फिर, रोना भी इस जीवन पर
मानव की कितनी कमजोरी,
पुण्य करूँ मैं खुले खजाने,
पाप करूँ मैं चोरी - चोरी !
पाप - पुण्य की अग्नि - राह पर
जल - मर जी जाना होता है !
कभी - कभी तो रोते दिल को
हँसकर बहलाना होता है !!

मुरझाई कलिका पर, सोचो,
मैंने कैसे फूल चढ़ाये,
आज लाद कंधों पर लाया,
कभी न पहिले हाथ बढ़ाये !
शव की अन्तिम मुस्कानों पर
बरबस मुस्काना होता है !
कभी - कभी तो रोते दिल को
हँसकर बहलाना होता है !!

## पत्थर बोला

मौन स्वरों में पत्थर बोला,
मानव, तू सुन भी पाया क्या !

'वह यदि तुझसे प्रीत निभाता;
तू जीवन को सफल बताता,
तूने भला किया, कब, किसका—
और निबाहा किससे नाता !
स्वर्ग धरा पर माँग रहा है,
पर देने को तू लाया क्या' ?
मौन स्वरों में पत्थर बोला,
मानव, तू सुन भी पाया क्या !!

'वह कल था, इतना क्या कम है,
आज नहीं है तो क्या दुख है,
याद दिलाने को दीवारें हैं,
इतना क्या थोड़ा सुख है!
झरें वृक्ष के मीठे फल यदि,
मधुर नहीं तरु की छाया क्या?'
मौन स्वरों में पत्थर बोला,
मानव, तू सुन भी पाया क्या!!

मैंने समझ देव पत्थर में,
पत्थर पूजा, शीष झुकाया,
कलि मुरझाई, गई चढ़ाई,
दीप बुझा जो गया जलाया,
प्रथम उसी दिन पत्थर बोला—
'क्यों, तेरा मन भर आया क्या'!
मौन स्वरों में पत्थर बोला,
मानव, तू सुन भी पाया क्या!!

## जीवन का मोल

जीवन का मोल किया कर, मन!

जीवन क्या है? बस सुधियाँ हैं,
सुधियाँ क्या? केवल अश्रुधार,
आहों से झंकृत श्वास क्षीण,
बज उठता मानस का सितार,
यह है सितार क्या? मिट्टी है,
मिट्टी का मोल किया कर, मन!
जीवन का मोल किया कर, मन!!

तू शून्य-देश का वासी है,
यह दृग-छाया बतलाती है,
निद्रा-सी इस विदेश में भी
सपनों की दुनिया आती है,
चिर-शून्य निशा में बादल बन
तारों का मोल किया कर, मन !
जीवन का मोल किया कर, मन !!

तूने हँसने का लिया नाम,
क्रंदन तुझको कर उठे याद,
रोकर दीवारें सूख गईं,
चित्रित है उन पर आर्त्तनाद !
क्या गहन दरारें देख रहा,
बन्धन का मोल किया कर, मन !
जीवन का मोल किया कर मन !!

## राही !

राही, पल भर पथ पर बैठो !

तुमसे कुछ उम्मीद लगाये
पेड़ों से पत्ते झरते हैं,
कोई इनके दुख पूछेगा,
कब से ये आशा करते हैं,
कोई इनकी सुनता पल भर,
इतनी फ़ुर्सत किसको !
राही, पल भर पथ पर बैठो !!

आगे है मैदान कि मीलों
जहाँ न तरु की छाया,
आगे है मैदान कि जिसमें
मरकर जीती काया !
कोमल-तन हो, सह न सकोगे
आँधी को, अंधड़ को !
राही, पल भर पथ पर बैठो !!

पल भर को भूलो विपदायें,
पल भर हँसकर जी लो,
माना, गरल तुम्हें भाता है,
फिर भी, अमृत पीलो !
जग का जीवन विष करता है,
अमृत के अमृत को !
राही, पल भर पथ पर बैठो !!

## मेरे आँसू

मेरे आँसू तारे बनकर
चमक रहे हैं चमचम - चमचम !

मैंने तम की चादर ओढ़ी,
ढाँक लिया मुँह साध साधना,
'माँगो जो वर चाहो माँगो',
आज कह रही लुटी कामना;
सम्वेदन में धैर्य भला क्या
जब सम्वेदन - क्रूर - दृष्टि सम !
मेरे आँसू तारे बनकर.........

मेरी आहों ने तुषार बन
दुनिया के दृग बंद कर दिये,
मेरी पलकें बंद युगों को,
कैसे देखें और किसलिये,
मेरे दिल की गहराई पर
मुस्काया मेरे दुख का क्रम!
मेरे आँसू तारे बनकर.........

आज प्रथम मेरे अलसित दृग
तन्द्रा ने आकर चुमकारे,
सपनों की नौका पर चढ़कर
तर आये सरि मेरे प्यारे,
'मृतक' जिओ-जागो,' बोले वे,
मैंने हँसकर तोड़ दिया दम!
मेरे आँसू तारे बनकर
चमक रहे हैं चमचम - चमचम!!

## कुछ

ऊषा ने सोने की थाली
लाकर मुझको अर्पित कर दी,
संध्या ने तारों की झोली
लाकर मेरे कर में धर दी,
बस और रूठकर बैठ गई
मेरी स्वाप्निल दुनिया पगली!

सरिता ने लहरों के कर से
युग - युग मेरा आह्वान किया,
फूलों ने अपने शूलों से
मेरा सच्चा सम्मान किया,
कुछ आँक न पाया मैं क़ीमत,
काँटे रोये, सरिता मचली!

जीवन ने सुख-दुख के कर से
मेरी बाहों को लिया जकड़,
दुख से मेरी हो गई प्रीति,
पा गया भेंट में श्वासें जड़!
कल लोहित संध्या के उर पर
कुछ राख उड़ी, कुछ चिता जली!
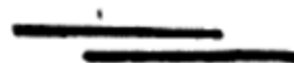
## आगे बढ़ता हूँ

मैं जितना आगे बढ़ता हूँ
पथ उतना बढ़ता जाता है।

युग - युग से नियति - पत्र पर ये
नित चित्र बनाता है किसका,
पलकों में अदल - बदल भरता
जाता है आकर्षण जिसका,
इन सहमी बैठी श्वासों को
क्यों और भला डरपाता है।
मैं जितना आगे बढ़ता
पथ उतना बढ़ता जाता है !!

आँसू की बूँदें चिनगारी
बनकर दहकी मेरे दृग में,
सुधियाँ घर की कंटक बनकर
चुभ गईं, यहाँ, मेरे पग में!
कोई शोणित का प्यासा है,
अपना कर-पात्र बढ़ाता है।
मैं जितना आगे बढ़ता हूँ
पथ उतना बढ़ता जाता है!!

युग-युग तारों ने चलकर भी
है नहीं पार पथ कर पाया,
रूठे तन-प्राण मनाने को
यह तूफ़ानी अंधड़ आया,
युग-युग का वैभव नष्ट हुआ,
मानव का मन घबड़ाता है।
मैं जितना आगे बढ़ता हूँ
पथ उतना बढ़ता जाता है!!

## दर्द

आँसुओं में दर्द है औ'
दर्द मेरी आह में है!

खुद रही जो जल शमा क्या
दे सकी अपने शलभ को,
किंतु, फिर भी भेद कुछ
प्रियतम-मिलन की चाह में है!
आँसुओं में दर्द है औ'
दर्द मेरी आह में है!!

शूल को मैं फूल कहता,
यदि न होता फूल सम्मुख,
फूल हैं पग में, हृदय में,
फूल किंतु निगाह में है!
आँसुओं में दर्द है औ'
दर्द मेरी आह में है!!

मैं दुखी हूँ-क्यों दुखी हूँ,
मैं दुखी तो क्यों दुखी मन,
रो पड़े जो हँस न पाये,
सोच पुलकित, किंतु, यौवन!
पापियों, लो, पुण्य लूटो,
पुण्य आज गुनाह में है!
आँसुओं में दर्द है औ'
दर्द मेरी आह में है!!

## गायक से

गायक, तू गाता जाता है !

तेरे स्वर - स्वर में पीड़ा है,
तेरे नयनों में है पानी,
दिल में कोई आग पुरानी,
बतला गायक—तू गाता या
आग-लगी को सुलगाता है !
गायक, तू गाता जाता है !!

बादल आये, बादल छाये,
बादल तड़पे, बादल बरसे,
छूट गया मेरा दिल कर मे,
मेरा मानव मेरे सम्मुख ही—
गिरता, ठोकर खाता है!
गायक, तू गाता जाता है!!

मेरी पीड़ा तेरी पीड़
में है केवल इतना अन्तर—
तेरे आँसू हैं वीणा पर,
मेरा रोदन पत्थर बनकर
पत्थर ही से टकराता है!
गायक, तू गाता जाता है!!

## अपराध

कौन-सा अपराध मेरा,
विश्व क्यों पीड़ा उभारे !

कंटकों की शरण ली
तज सुमन-सुरभित राह मैंने,
दुख न जाये दिल किसी का.
आह ! पी ली 'आह' मैंने !
साधना-पथ का पथिक हूँ,
सान्त्वना का भी न इच्छुक,
दग्ध-उर की तप्त-श्वासों से स्वयं मैं ही जला रे !
कौन सा अपराध मेरा,
विश्व क्यों पीड़ा उभारे !!

डूबती है नाव मेरी,
दूर हैं दोनों किनारे,
गति न विधि की टूट जाये,
हाथ भी मैंने न मारे !
मैं न बोला, मैं न डोला,
कौन सी फिर क्षति गई हो,
देख जो मैंने लिये हैं, हो गये अंगार तारे !
कौन सा अपराध मेरा,
विश्व क्यों पीड़ा उभारे !!

बीत जो सुख के गये दिन
अब न फिर से आ सकेंगे,
अश्रुकन मेरे किसी का
दिल न अब पिघला सकेंगे !
यह उजाला ! भाग्यवाला—
मैं नहीं हूँ, जानता हूँ,
चिर-निराश्रित, आज कैसा आसरा, कैसे सहारे !
कौन सा अपराध मेरा,
विश्व क्यों पीड़ा उभारे !!

## अब आओ !

माना, आ न सके, अब आओ !

हास घुटे अधरों के अन्दर,
अश्रु कपाटों में पलकों के,
रात्रि अमर हो, सो न जगें फिर
इतना वर दे जाओ !
माना,
आ न सके,
अब आओ !!



धूप की लहरें

दूर चिता में जड़वत् बनकर
मानव का मन झुलस रहा है,
नीर बनो, मैं कब कहता हूँ,
घृत बनकर सुलगाओ!
माना,
आ न सके,
अब आओ!!

नदी किनारे, विकल तरंगें
करुणा-स्वप्न बन शीष पटकतीं,
शांत इन्हें ही कर दो आकर,
अपने पग धो जाओ!
माना,
आ न सके,
अब आओ!!

## आँसू हैं

आँसू हैं ये, बह जायेंगे!

नया दर्द है, नई आह है,
नया आँसुओं का प्रवाह है,
सीधी नगरी को जाती है
लेकिन बीहड़, विकट राह है!
तृण पर चोट पड़ी है घन की,
सहते-सहते सह जायेंगे!
आँसू हैं ये, बह जायेंगे!!



धूप की लहरें

तुम न दया इनपर दिखलाओ,
तुम न पोंछने इनको आओ,
सम्भव हो, यदि बढ़ा सको तो
वश भर पीड़ा और बढ़ाओ,
रोने दो, दिल हलका होगा,
हम रोकर दिल बहलायेंगे!
आँसू हैं ये, बह जायेंगे!!

तुम न रहोगे, ये न रहेंगे,
तुम न सुनोगे, ये न कहेंगे,
इनका ही दिल रह जाये क्यों,
बह लेने दो, अब न बहेंगे!
आँसू के नयनों में कल से
केवल पत्थर रह जायेंगे!
आँसू हैं ये, बह जायेंगे!!

# सुबह का धुंधलापन—

## छुओ मत !

वीणा के, देखो, तार छुओ मत !

तुम इस पर कुछ बजा सकोगे, कैसे हो विश्वास,
उर में पीर, नयन में आँसू नहीं तुम्हारे पास !
पतझर के पत्तों से बिखरे हैं
जिसके अरमान,
रुंधे गले से जो गाता है सदा
हृदय के गान,
उसके अरमानों-गानों के ये आकार छुओ मत !
वीणा के, देखो, तार छुओ मत !!

कलाकार की सी आँखों में ज्योति न तुमने पाई !
कलाकार की अपनी दुनिया तुमने नहीं बसाई !
इस दुनिया के शब्दों में जो कभी
प्यार करता है,
अपनी छोटी-सी दुनिया पर जग
निसार करता है,
उसके राग-त्याग के सुन्दर ये आगार छुओ मत !
वीणा के, देखो, तार छुओ मत !!

तुम क्या जानो आँसू की, आहों की परिभाषायें !
तुम क्या जानो दग्ध-प्रणय की अपनी अभिलाषायें !
आरोहों—अवरोहों में जो शत-शत
दीप जलाये,
जो दीपों में ज्योति, ज्योति में प्रिय की
छवि बन जाये,
उसके 'दीपक'—'प्रिय' की छवि के ये आधार छुओ मत।
वीणा के, देखो, तार छुओ मत !!

## मैं ख़ुश हूँ

मैं ख़ुश हूँ, नाराज़ नहीं हूँ !

मैंने माना—मानव का गुण हँसना है, रोना भी,
लेकिन अपने दुख में उसने अलसित अँगड़ाई ली !
मैंने जो कुछ जाना-माना,
दुनिया ने सब जाना,
जिसे न कोई जाने-समझे
मैं तो ऐसा राज़ नहीं हूँ !
मैं ख़ुश हूँ, नाराज़ नहीं हूँ !!


धूप की लहरें

मैंने माना—घृणा-प्यार का एक रूप है मानव,
कभी-कभी सब सुन लेते हैं उसके अन्तर का रव;
सोच रहा हूं मैं-अपना है
रोग स्वयं ही रोगी,
बोल रहा हूँ, डोल रहा हूँ,
हँसता हूँ, नासाज़ नहीं हूँ !
मैं खुश हूँ, नाराज़ नहीं हूँ !!

एक पथिक, जिसका दस डग घर, कुछ गाता आता है,
चंदा बनकर कभी चमकता, तारे बन जाता है,
और किसी के चिर-यौवन से
जिसका जीवन जगमग,
जिसका स्वर-स्वर क्षणभर में ही
धरा-गगन में गूँजा,
उसकी एक गूँज मैं भी हूँ,
किंतु...किंतु आवाज़ नहीं हूँ !
मैं खुश हूँ, नाराज़ नहीं हूँ !!

## पी कहाँ

पी कहाँ, रे विश्व, मैंने पी कहाँ !
    जो कभी मुझको पिलाता—
                'पी' कहाँ !
                पी कहाँ !!

साथ मेरा और उनका
    युग रहा,
किंतु तब भी हृदय ने
    रोकर कहा—
    'आग जो अन्दर लगी
                उभरी कहाँ !
                पी कहाँ !!

रूप का प्यासा, बुझी है
प्यास कब,
मन रहा कहता, हुआ
विश्वास कब—
'आदि—पीड़ित, मोल पीड़ा
ली कहाँ'!
पी कहाँ!!

आज भी मय है मगर कम—
लाल है,
ज्यों उसे भी कुछ उन्हीं का
ख़याल है
लाल आँखें हैं मगर
लाली कहाँ!
पी कहाँ, रे विश्व,
मैंने पी कहाँ!!

# मैं हारा

मैं तो राह देखकर हारा !

कलियों ने अपने अलियों से
अपने मन की कही-सुनी है,
उनकी बात बहुत छोटी थी,
मेरी गाथा कई गुनी है ;
आश बँधी है—व्यर्थ न होगा—
मेरा रोदन - क्रंदन सारा !
पर मैं राह देखकर हारा

रात भीगती जाती है अब,
मेरे, तुम तो गये सवेरे,
मुझको तो काटे खाते हैं
इने-गिने ये सपने मेरे!
अपलक देख रहा हूँ, तुमको
पथ दिखलाता है ध्रुवतारा!
मैं तो राह देखकर हारा!!

कोई पथिक इधर आया तो
मैं कहता हूँ—आते हो तुम,
मैं रोता हूँ, आँसू बनकर
मुझसे कुछ कह जाते हो तुम!
'मेरा साथी कहीं गया है,
आता ही है इस पल, उस पल,
कहता हूँ मैं सम्हल-सम्हलकर'
रुककर कभी पूछता है कुछ
जो कोई पंथी बेचारा!
मैं तो राह देखकर हारा!!

## मैं थका

मैं थका, थके हैं मेरे पग !

मैं देख रहा हूँ अपना घर,
उड़ता ही है जिसका छप्पर,
चुप्पी साधे, सुलझा-उलझा
कोई बैठा है चौखट पर,
उसकी आँखें मेरे पथ के
तम में कर उठती हैं जगमग !
मैं थका, थके हैं मेरे पग !!

दस-पाँच क़दम की बात नहीं,
लगता है मीलों चलना है,
तुम समझो, मैं घर पहुँच गया,
मैं समझूँ, बस, कर मलना है!
त अधर विहँसे,
देखो, रोते हैं मेरे दृग!
मैं थका, थके हैं मेरे पग!!

लो पात दबे, लो दबे फूल,
शूलों के उर में चुभे शूल,
वह मेरा घर! यह मेरा पथ!
लाचारी मानव गया भूल,
उफ़, पड़ते नहीं ठिकाने पग—
डगमग-डगमग-डगमग-डगमग
मैं थका, थके हैं मेरे पग!!

## आज

आज घाव दिल के भर आये !

आज जवानी की समाधि पर
चेतनता का दीप उठा जल,
हिली-डुली वह लपक हवा में
या उल्लास हँस उठा चंचल ?
धन्य हुआ आँसू का जीवन,
पानी ने पत्थर पिघलाये !
आज घाव दिल के भर आये !!

सोख लिया नयनों का सागर
रूप-राशि ने मुनि अगस्त्य बन,
मधु-वसन्त में हवा बही यों
झुलस गये थे नन्दन-कानन !
एक आह न पलटा अग-जग,
कौन व्यर्थ को बात बढ़ाये !
आज घाव दिल के भर आये !!

जीवन की सूनी राहों पर
आज लगे तारों के मेले,
आज न साथी गिन पाता हूँ,
कल तो था, किंतु, अकेले !
स्वर्ण-रजत का भावी समझे,
अश्रु-केलि कर जी बहलाये,
वह जग में मानव कहलाये !
आज घाव दिल के भर आये !!

## सावन !

सावन के दिन सूने - सूने,
यह गरम हवा, यह कड़ी धूप !

सोचा था—बीता जेठ मास,
आया असाढ़, आया सावन,
जल बरसेगा, अब हरा-भरा
हो जायेगा यह मेरा मन—
वह पानी भरने जायेगी,
भर जायेगा वह, वहाँ, कूप !
सावन के दिन सूने - सूने,
यह गरम हवा, यह कड़ी धूप !!

सोचा था—रिमझिम-रिमझिम कर
जब बरसेंगे काले बादल,
उस मधुवन में झूला होगा,
झूला झूलेगी वह चंचल,
मैं इन्द्र-धनुष बन अम्बर से
आँकूँगा उसकी छवि अनूप!
सावन के दिन सूने-सूने,
यह गरम हवा, यह कड़ी धूप!!

सोचा था—अन्तर की ज्वाला
बन की मेंहदी बन जायेगी,
वह रच-रच अपने हाथों से
जब अपने हाथ रचायेगी,
चिर जरा-ग्रस्त साधें मेरी
होंगी यौवन का आदि-रूप!
सावन के दिन सूने-सूने,
ये गरम हवा, ये कड़ी धूप!!

## गाओ तो

मेरे गीतों को गाओ तो !

जो सुख तुमसे सब दिन रूठा,
जो कभी न सपनों में आया,
जिसको तुम पर हँसना भाया,
वह नौ - नौ आँसू रोयेगा,
वीणा पर हाथ चलाओ तो !
मेरे गीतों को गाओ तो !!

जिस छविको तुमने प्यार किया,
इस पार किया, उस पार किया,
उसने ऐसा व्यवहार किया,
वह तो पानी - पानी होगी,
तुम राग 'विहाग' सुनाओ तो!
मेरे गीतों को गाओ तो!!

मेरे गीतों में घुल - मिले
कितने पावस, कितने सावन,
कितने जीवन, कितने यौवन!
श्वासों को हृदय लगाना है,
श्वासों से होड़ लगाओ तो!
मेरे गीतों को गाओ तो!!

## मैं

मैं सुरा का नशा-सा हूँ,
मैं झुकन मदिराभ दृग की!

पूजते प्रतिमा युगों से
बन गया पाषाण चेतन,
किंतु फिर भी भर न पाया,
हाय, निष्ठुर विश्व का मन!
खुल गये मन्दिर-शिवालय,
मैं उठा मदिरा गया पी!
मैं सुरा का नशा-सा हूँ......

चार तिनके फूस के भी
रह न पाये झोपड़ी पर,
जो व्यथित अपनी व्यथा से
वेदना से दिल गया भर!
विश्व समझा अश्रु मेरे,
किंतु पलकों ने सुरा पी!
मैं सुरा का नशा-सा हूँ......

ठोकरें खाता फिरा मैं,
लड़खड़ाये पैर मेरे!
आज सहसा सुधि-रगड़ से
रिस उठे छाले अनेरे!
हाय, मद से चूर को भी
विश्व ने मदिरा पिला दी!
मैं सुरा का नशा-सा हूँ,
मैं झुकन मदिराभ-दृग की!!

## सह-सह

सह, सह, दुख सह जाना होगा!

बोल! सुस्त क्यों आज पड़ा तू?
उफ़! तेरे नयनों में पानी!
रे मानव, इतनी नादानी!
जला, जला, सूने घर में भी
तुझको दीप जलाना होगा!
सह, सह, दुख सह जाना होगा!!

शीष झुका कर रोनेवाले,
तूने सोचा भी है पल भर,
तू कलंक है मानवता पर!
घिरे सघन घन, बिजली बनकर
तुझको भी मुस्काना होगा!
सह, सह, दुख सह जाना होगा!!

उसका चित्र सामने तेरे,
तू रोता है, वह गाती है,
जैसे कह-कह मुस्काती है—
प्राण, प्यार का मूल्य चुकाने—
रुंधे कंठ से गाना होगा!
सह, सह, दुख सह जाना होगा!!

## पल भर को

पल भर को सुख मिल जाता है—

मैं कहता हूँ—जाओ पंछी,
तिनके चुन-चुन लाओ पंछी,
फिर से नीड़ बनाओ पंछी!
सुनता है, वह झुलसे वन से—
अधझुलसे तिनके लाता है!
पल भर को सुख मिल जाता है!!

मैं कहता हूँ—गाओ गायक,
बीती बात भुलाओ गायक,
गाओ, जी बहलाओ गायक!
सुनता है—वह रुँधे गले से
टूटे तारों पर गाता है!
पल भर को सुख मिल जाता है!!

मैं जीवन का कर में ले कर
सोच रहा हूँ—जीता क्षण भर,
जिस विधि भी हो हँसकर, रोकर,
कभी-कभी वह मुझसे मिलने
मेरे सपनों में आता है!
पल भर को सुख मिल जाता है!!

## अब कि जब

स्वप्न हैं साकार मेरे
अब कि जब गत-श्वास हूँ मैं!

पास यदि पल पूर्व आते
दूर होते मृत्यु के क्षण,
अमृत होते जो अधर पर
अब गरल से अश्रु के कण!
जो न मिट पाये पिपासित—
को मिटा वह प्यास हूँ मैं!
स्वप्न हैं साकार मेरे...

श्वास डूबी, क्या हुआ मैं,
खोजता उठ दृग-सितारा,
जगमगाती धार जाती,
जगमगाता जग-किनारा—
तज अधर-आधार लहरों—
में बसा जो हास हूँ मैं!
स्वप्न हैं साकार मेरे…

यदि चिता इसको बताते
तृप्ति का उल्लास फिर क्या!
मृत्यु यदि इसको बताते
मुक्ति का विश्वास फिर क्या!
जो अभावों से गया हो पूर्ण
वह इतिहास हूँ मैं!
स्वप्न हैं साकार मेरे
अब कि जब गत-श्वास हूँ मैं!!

## कैसे !

मेरे नयनों में आँसू हैं
सुसमय में कैसे !

अनुचित है, कर्त्तव्य न समझूँ,
गीतों को गाऊँ,
तुमको जानूँ, तुमको मानूँ,
तुम पर बलि-बलि जाऊँ,
पर, तुममें ऐसा खोया हूँ स्वर लय में से !
मेरे नयनों में आँसू हैं
सुसमय में कैसे !!

अनुचित है, स्मृतियों के बन्धन—
से तन-मन जकड़ूँ,
जो न हाथ मेरे आयेगी
परछाईं पकड़ूँ,
पर, निर्माण देखता हूँ मैं अब क्षय में जैसे!
मेरे नयनों में आँसू हैं
सुसमय में कैसे!!

अधिक उचित था निशि में भी पथ—
पर बढ़ता जाता,
विश्व सुबह मंजिल पर चलता,
मैं मंजिल पाता,
सिद्धि प्राप्त भी करता, पर, मैं इस वय में कैसे!
मेरे नयनों में आँसू हैं
सुसमय में कैसे!!

## प्यार भरो !

मेरे प्राणों में प्यार भरो !

तुमने मेरी तारोंवाली रातों को कुछ न समझ पाया,
मैं नित्य सुबह तारों के संग धूमिल होने जग में आया !
पर, एक कामना है विशेष—
मैं बदलूँ अपना मलिन वेष,
तुम मेरी छवि से जग की छवि का शृंगार करो !
मेरे प्राणों में प्यार भरो !!

तुमने पतझर के पत्तों में मेरी साधें मुरझाने दीं,
मैं एक गिरि-शिखर हूँ, मैंने रस की नदियाँ बह जाने दीं !
पर, एक लालसा है मेरी—
मधुऋतु आने में है देरी,
तुम मेरे मधु से मधुमय सारा संसार करो !
मेरे प्राणों में प्यार भरो !!

तुमने कब यह जीवन समझा, कब जीवन का अमृत चक्खा,
तुमने मेरी रचनाओं को जीवन से दूर-दूर रक्खा !
पर, एक बात कहता हूँ मैं—
कविता बनकर बहता हूँ मैं,
तुम 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्, बनकर यश-विस्तार करो !
मेरे प्राणों में प्यार भरो !!

# धूप की लहरें—

## गगन के पार

तुम मुझे गगन के पार लिये जाते हो!

तुम कहते हो—'तुम दुनिया पर इतराये!
दुनिया में मिलते हैं गुलाब मुरझाये!
अम्बर के नन्दन में जो कलियाँ फूटीं,
उनमें तुमने अपने आकार छिपाये!
अम्बर के अलियों की कलियों को देखो!
अम्बर की इन रसमय गलियों को देखो!
देखो, तुम मुस्काये तो भौंरे आये,
तुम क्यों नयनों में आँसू भर लाते हो!
तुम मुझे गगन के पार लिये जाते हो!!

मैंने जो देखी मधुवन में हरियाली,
मैंने जो अपनी वीणा आज सम्हाली,
'नश्वर गीतों से देखो तार न टूटे',
ऊँची डाली से बोली कोयल काली !
मेरे गीतों में सार कहाँ से आये !
मेरे जीवन में प्यार कहाँ से आये !
फिर, धरा-गगन में कैसे गूँजे स्वर-स्वर,
मैं गाता हूँ, तुम पत्थर बन जाते हो !
तुम मुझे गगन के पार लिये जाते हो !!

यह आसमान मैं समझ नहीं क्यों पाया !
मैं हूँ महान, मैं समझ नहीं क्यों पाया !
अम्बर की कलिका धरती पर मुरझाई,
यह प्राण-दान मैं समझ नहीं क्यों पाया !
जो मेरे काम न आये वह अम्बर क्या !
जो मेरे काम न आये वह ईश्वर क्या ?
अम्बर के ईश्वर, लेकिन मैं सुनता हूँ--
तुम जब-तब मेरी पृथ्वी पर आते हो !
तुम मुझे गगन के पार लिये जाते हो !!

## मैं चलता हूँ तो

मैं चलता हूँ तो तारे भी चलते हैं !

भ्रामक दुनिया की नज़रों में यह भ्रम है,
मेरी नज़रों में यह सपनों का क्रम है,
अपना-अपना मुँह अपनी-अपनी बातें,
अपना-अपना फल, अपना-अपना श्रम है !
मैंने जो अपने पथ पर पाँव बढ़ाये,
मेरी मंजिल ने पथ पर फूल बिछाये !
फिर, मैं पथ पर एकाकी हूँ, मिथ्या है,
मेरे संग-संग ये तारे भी चलते हैं !
मैं चलता हूँ तो तारे भी चलते हैं !!

'दुनिया ने अपनी मंजिल तय कर डाली',
उपवन से कहती है पंचम-स्वरवाली,
लेकिन, मैं कवि हूँ, सोच रहा हूँ प्रतिपल—
क्या सत्य धवल उगलेगी कोयल काली!
यह दुनिया थककर बैठ गई है पथ पर!
देखो जीवन, देखो गति भीतर-बाहर!
पर मेरा जीवन निखर—उठा यौवन है,
पर मेरी गति से तारे भी चलते हैं!
मैं चलता हूँ तो तारे भी चलते हैं!!,

मैं झरनों से बातें करता चलता हूँ,
नदियों के मन का दुख हरता चलता हूँ,
रेगिस्तानों के ताड़ मुझे प्यारे हैं,
अमृत से अपना घट भरता चलता हूँ!
दुनिया को प्यार करेंगे दुनियावाले,
दुनिया को प्यार करेंगे दिल के काले!
मैं चलता हूँ इस दुनिया पर मुस्काता,
दुनिया ठुकराते तारे भी चलते हैं!
मैं चलता हूँ तो तारे भी चलते हैं!!

## मैं रोकर हँसता-गाता हूँ !

मैं रोकर हँसता-गाता हूँ !

मैंने कभी न चाहा मेरे
गायन गूँजे धरा गगन में,
और न क्षण भर भी रह पाऊँ
मैं अपने ही आर्द्र-नयन में;
जो पथ भटके, मुझको खटके,
मैं ध्रुवतारा कहलाता हूँ !
मैं रोकर हँसता-गाता हूँ !!

मैंने कभी न चाहा मेरे
आँसू भर दें सूखे सागर,
और न अपना भी रह जाऊँ
मैं अपनेपन को अपनाकर;
युग-युग बीते मैं दुनिया को
जीना-मरना सिखलाता हूँ!
मैं रोकर हँसता-गाता हूँ!!

मैंने कभी न चाहा कह दूँ
मैं देवों से भी मनचाही,
मुझको मेरा पाप खला ही,
मुझको मेरा पुण्य फला ही!
जीवन है देवत्व मनुज का,
अपनी पूजा करवाता हूँ!
मैं रोकर हँसता-गाता हूँ!!

## प्यारे हो तुम !

प्यारे हो तुम,
मध्य निशा के तारे हो तुम !

अब तक हम दोनों में जग ने कितना भारी अन्तर रक्खा,
तुमको अपने गगनांगन में, मुझको अपनी भू पर रक्खा,
कितना भारी अन्तर रक्खा !
पर ज्यों सौ मुंह से कहते हो—
प्यासे में पानी में अन्तर !
सचमुच, कितने प्यारे हो तुम !
मध्य-निशा के तारे हो तुम !!

स्वप्न अभी मैंने देखा है, तुम नभ से उतरे आते हो,
जग सोये, जागूँ केवल मैं, एक गीत ऐसा गाते हो,
तुम नभ से उतरे आते हो!
मैंने सच को सपना समझा,
सपने को सच कैसे समझूँ!
फिर भी, कितने प्यारे हो तुम!
मध्य-निशा के तारे हो तुम!!

दुनिया ने कब ममता मानी, दुनिया ने व्यापार किया है,
दुनिया ने केवल मुर्दों का, हंस-हंसकर शृंगार किया है,
दुनिया ने व्यापार किया है!
दुनिया मेरी सत्ता माने,
मैं तुममें प्रतिपल जगमग हूं!
प्यारे, कितने प्यारे हो तुम!
मध्य-निशा के तारे हो तुम!!

## बताओ !

बताओ, मैं क्यों गीत लिखूँ !

नयनों में जल नहीं रहा पर
छलक उठी है प्याली,
रुँधे गले से क्या गा—
पायेगी पंचमस्वरवाली,
कौन बतायेगा, फिर, गीतों में
गीतों का मोल !
बताओ, मैं क्यों गीत लिखूँ !!

कोई अपने नहीं रहे, फिर भी
सपने हैं प्यारे,
बादल में छिपते जाते हैं
आसमान के तारे,
कौन आर्द्र होगा, फिर, सुन-सुनकर
'विहाग' के बोल !
बताओ, मैं क्यों गीत लिखूँ !!

आज न कोई आशा बाक़ी और
न है अभिलाषा,
कवि का मानव भूल गया है
मानव की परिभाषा,
दग्ध-चिता के सिरहाने बैठा
गाता है गाने,
कौन भला, फिर, देखेगा दुनिया
को आँखें खोल !
बताओ, मैं क्यों गीत लिखूँ !!

## बतलाओ तो

बतलाओ तो, मैं क्या गाऊँ !

अलियों ने अपनी कलियों को जो गीत सुनाने को गाये,
वे ही मेरे अनजाने में मेरे स्वर-स्वर बनकर आये !
तुमने देखा—लग गई आग,
तुमने देखा—जल गया बाग़,
कलियाँ झुलसीं, जी करता है,
मैं जल जाऊँ, मैं मर जाऊँ !
बतलाओ तो, मैं क्या गाऊँ !!

लहरों ने सागर के तट से जो भेद कहा, मैं समझ गया,
मैंने कितने ही गीत रचे, मैं सुलझ-सुलझकर उलझ गया !

तुमने देखा—झुलसा सागर
उमड़ा-सा आता है अन्तर,
नयनों में शोले शंकित हैं—
आँसू न कहीं मैं भर लाऊँ !
बतलाओ तो, मैं क्या गाऊँ !!

धू-धू करती इन लपटों से लिपटा मानव कुछ गाये, प्रिय,
टिमटिम करते निज दीपक को वह अपने-आप बुझाये, प्रिय,

यह मानवता से हो न सका,
मानव मानवता खो न सका !
यह महा-प्रलय की बेला है,
मैं प्यार करूँ, मैं मुस्काऊँ !
बतलाओ तो, मैं क्या गाऊँ !!

## स्वप्न

मैंने स्वप्न मिलन का देखा !

प्रणय-स्वप्न-शृंखला टूटकर
सत्य बनी, पहिचान न पाया,
मानव-मानव में यह अन्तर
कृत न पाया, जान न पाया !
मैंने चिन्ता से पीला मुंह
जीवन के क्षण-क्षण का देखा !
मैंने स्वप्न मिलन का देखा !!



धूप की लहरें

आज प्रणय—व्यापार करूँ या
इस दुनिया में जीना सीखूँ,
लगें ठोकरें, चलता जाऊँ,
जलते आँसू पीना सीखूँ!
मेरा शीष झुका, गर्वोन्नत शिर
मैंने कण—कण का देखा!
मैंने स्वप्न मिलन का देखा!!

मुझे न इच्छित ऐसी प्रेयसि
जो मेरे पथ की बाधा हो,
रास-केलि-क्रीड़ा की इच्छुक
कृष्ण-कन्हैया की राधा हो!
मेरी प्रेयसि अग्नि-राह पर
मुझसे बीस क़दम आगे हो,
मैंने अंगारों के क्रंदन में
जीवन जीवन का देखा!
मैंने स्वप्न मिलन का देखा!!

## ब्रह्मा पूजे–शंकर पूजे

मेरे घर भी दीवाली है,
प्रिय, मैं भी दीप जगाऊँगा;
मुझमें पूजा के भाव जगे,
प्रिय, मैं भी थाल सजाऊँगा !
पर, मैं मानव को पूजूँगा
जो दुनिया में जीना जाने,
अमृत का रखकर पात्र अलग
जो हँसकर विष पीना जाने !!

× ×

मेरे घर भी दीवाली है,
प्रिय, मैं भी दीप जगाता हूं,
अपने मानव के चरणों पर
देखो, मैं शीप-झुकाता हूँ !
जग ने लक्ष्मी-गणेश पूजे—
मिट्टी पूजी, पत्थर पूजे,
मैंने अपना मानव पूजा,
ब्रह्मा पूजे, शंकर पूजे !!

## दीवाली



दीवाली है, सब कहते हैं—
निज गृह दीपों से जगमग कर,
दीवाली है, तू पूजन कर,
तू थाल सजा सुन्दर-सुन्दर !
लावा-लाई - चिउरा-रेवड़ी—
चीनी के मधुर खिलौने ला,
आमन्त्रित कर संगी-साथी
बचपन में जिनके संग खेला !
दीवाली है त्यौहार बड़ा,
आता है साल बीतने पर,
यह क्या है, ऐसे शुभ दिन भी,
तेरी आँखें आई हैं भर !

× ×

मैं कहता हूँ—उनको देखो
जिनके रहने को ठौर नहीं,
जिनके चुचके मुँह कहते हैं—
हमने पाये दो कौर नहीं!
तुम खुशी मनाते हो, देखो,
वह सांस किसी की टूटी है!
सच कहता हूँ—तुम हो जिसने
दीनों की दुनिया लूटी है!
तुम स्वर्ग बनाते हो अपने
पटरस देवों को अर्पण कर,
अथवा निश्चित हुये हो तुम
जीवित पित्रों के तर्पण कर!

× ×

तुम अपना तनिक वेष देखो,
तुम अपना तनिक देश देखो,
कलकत्ते के फुटपाथों पर
अपने लक्ष्मी—गणेश देखो!

## होली

फागुन बीता, आई होली,
कोयल सहसा बोली—
याद तुम्हें है अथवा
भूल गये तुम ब्रज की होली!
उन्मन हो,तुम अनुभव करते
क्या न जरा भी हर्ष,
तुम पर बुरी तरह हावी है
जीवन का संघर्ष!
तुम्हें कृष्ण-ब्रज-बालाओं की
क़सम, ज़रा मुस्कादो,
अपने मोहक, मधुर गले से
जकी होली गा दो!

× ×

हम कहते हैं—री कोयल
तू बौरों पर बौराई,
तूने ठूँठ न देखे,
देखी मधुवन की सुघराई !
तू क्या जाने जीवन का संघर्ष,
शोक या हर्ष,
तूने मुग्धा बन कर काटा
अपना सारा वर्ष !
हम नंगों—भूखों की दुनिया—
का क्या तुझको ज्ञान,
हमने दो-दो दानों पर
बेचीं अपनी सन्तान !
आज कृष्ण-व्रज-बालाओं की
क़सम न देगी साथ,
नाच रहे हैं आखों में
कलकत्ते के फ़ुटपाथ !

× ×

मना चुके हम युग-युग होली,
मना चुके त्यौहार,
आज जियेंगे हम मरने के
पहिले भी सौ बार !

## दूधवाली :

बालों में नौ मन धूल भरी,
गरमी से आँखें लाल-लाल
वह दूध बेचने आती है,
उस दूर गाँव से दीन बाल !

'इतनी अबेर कर लाई है, ले जा, अब दूध कौन लेगा,
क्या कुछ हराम का पैसा है, कोई हराम में दे देगा !
'टी-टाइम' पर तू रोज़ दूध, कै बार कहा, ले आया कर,
अब दोपहरी में लाई है, क्या तू रक्खेगी गरमाकर !
सोते से जगा दिया आकर :
बोलीं मलकिन आँखें निकाल !'
बालों में.........

'तेरह दिन का बाक़ी हिसाब पहिली को होगा समझी री !
क्या कोस रही है मन ही मन जो गाल फुलाये बैठी री !
छोटे गिलास से नाप-नाप दे गई सेर का तीन पाव,
हरकू देता है छः पैसे, तेरा दो आने एक भाव !
पड़ती है नहीं मलाई भी,
लाती होगी मक्खन निकाल !'
बालों में.........

वैभव का था उन्माद घना, मद था मदभरी जवानी का,
क्या कभी ख़्याल आया दिल में दीनों की दीन कहानी का !
तेरह दिन में छब्बीस आने अंगारों पर चल कमा सकी,
रह गई आह भर, घुट भीतर, कुछ, हाय, न अपनी सुना सकी !
आँखों में आँसू बन उमड़े,
वैधव्य-रूप, उन्नीस साल !
बालों में नौ मन धूल भरी,
गरमी से आँखें लाल-लाल,
वह दूध बेचने आती है,
उस दूर गाँव से दीन बाल !!

वहाँ दूर पर, भव्य महल की ऊँची छत पर,
बैठी एक चील है अपनी राह भूलकर !
श्वासें गला-गला ढूँढ़ी है दूर देश की राह,
शून्य-विश्व के शून्य-गगन की,किंतु न पाई थाह !
परदेशी-सी जिसके पग नैराश्य पान कर,
नाप न सकते हों डग भर भी आगे चलकर,
बैठ गई चंचल जीवन में करने को आराम,
देना पड़ता जहाँ आँसुओं में जीने का दाम !
उड़ा ले गया पवन गर्द उस छत की पल में पोंछ,
बिछा दिये पेड़ों ने क्षण में अपने पत्ते नोच !

डोल उठे जब तार, रेडियो के, भाव-मग्न से !!

*   *   *

एक भिखारी एक फटी कोपीन पहिन कर,
अपनी दीन दीनता धंसे पेट पर धरकर,
माँग रहा है सपनों से रोटी के गस्से,
पड़ा हुआ है उस बँगले के, उस फाटक पर !

तीन बजे, साहब ने अपनी 'कार' निकाली,
राह साफ़ करने को दौड़ा 'कंचन' माली,
देखा—एक भिखारी, नंगा, गंदा सोता,
'उठ रे', मारी लात, नींद भी, हाय, जगा दी !

बैठ गया उठ दीन,गंदा को, सह न सका आघात !!

* * *

उड़ गई चील,
क्रोधावेश,
रँग गया अम्बर—
क्रोध के रंग !

## मैंने

मैंने अम्बर के तारों से पूछा—
तुम भी हमसे आकुल-आतुर हो क्या ?
वे बोले—जो कुछ होना हो सो हो,
आगत-गत की चिन्ता अपने को क्या !!
मैंने मुस्काकर कहा कि यह सच है,
पर 'वर्तमान' को तुम क्या कहते हो ?
वे बोले—तुम तो अपने दुश्मन हो—
तर्कों की दुनिया में तुम रहते हो !!



धूप की लहरें

हम सदा एक से रहते आये हैं,
सुख-दुख, जो आया, सहते आये हैं!
'खुद मिटो किंतु औरों को जीवन दो',
हम दुनिया से ये कहते आये हैं!!
बादल आयें, छाये या वे निकले-
तुम पूर्व और पश्चात मलीन न हो!
तुम गरिमा-श्री-सिद्धि स्वर्ग को दो,
तुम, सहसा, मुरझाकर श्रीहीन न हो!!
नयनों की कोरों में आँसू हों, हों,
अधरों पर बिजली हो मुस्कानों की!
तुम अमरों के अमरत्व ईश्वर हो!
तुमको चिन्ता है अपने प्राणों की ??

## चल पड़ा मैं !

चल पड़ा मैं, चल पड़ा मैं !

विश्व ने मंज़िल न पाई,
व्यर्थ ही आँसू बहाये,
किंतु वे तारे कहाये,
जो गगन में जगमगाये !
मैं रहूँ परदेश में क्यों,
यदि बढ़ा पथ तो बढ़ा मैं !
चल पड़ा मैं !!

विश्व प्यासे ने न पथ में,
बूँद पाई सागरों से,
किंतु उसने क्या न पाया,
आज अपने ही करों से!
भर गया मुँह तक लबालब,
वह चला रिस्ता घड़ा मैं!
चल पड़ा मैं!!

विश्व ठिठका, याद आई,
बात कुछ भूली—भुलाई,
और मेरे सामने भी, हाँ,
किसी की मूर्ति आई,
बैठ जाऊँ, किन्तु, पथ पर,
एक चलने को निरन्तर,
जब हुआ उठकर खड़ा मैं!
चल पड़ा मैं,
चल पड़ा मैं!!